Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

मध्यकालीन भारत (भाग–2)

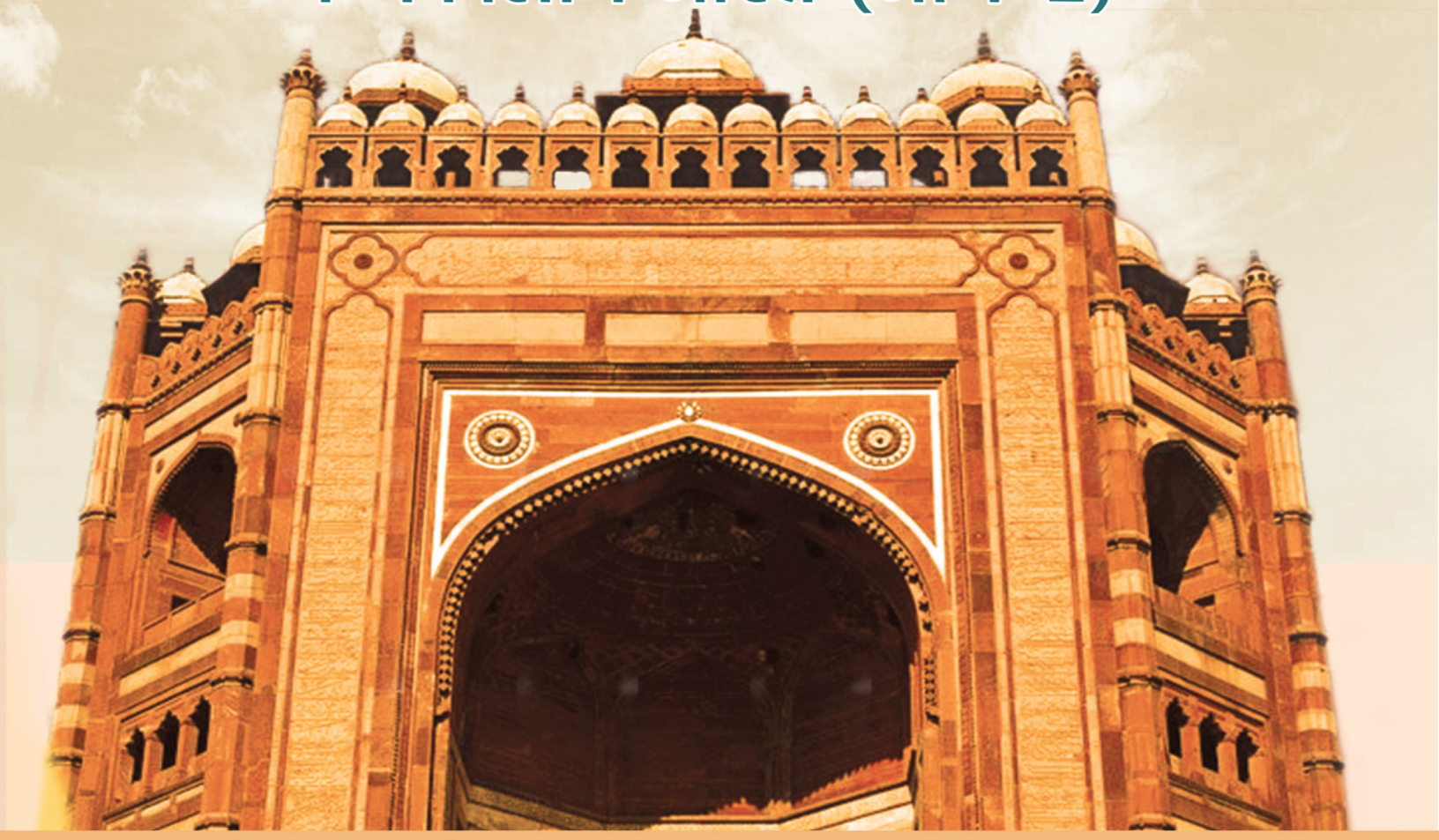

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSHS04

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

मध्यकालीन भारत (भाग–2)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web: www.drishtiias.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

10. भक्ति आंदोलन 5–48

11. मुगल साम्राज्य एवं नीतियाँ 49–90

12. मुगलकालीन सभ्यता और संस्कृति 91–105

13. इतिहास लेखन की मध्यकालीन परंपरा 106–136

अध्याय
10

भक्ति आंदोलन
(Bhakti Movement)

10.1 भक्ति आंदोलन का इतिहास लेखन तथा प्रवृत्तियाँ
10.2 भक्ति का उद्भव
10.3 उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन
10.4 भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत
10.5 अन्य भक्ति संत
10.6 महाराष्ट्र धर्म
10.7 भक्ति आंदोलन तथा स्त्री समाज
10.8 सूफीवाद
10.9 सूफी मत का विकास
10.10 सूफीवाद का सिद्धांत
10.11 सूफीवाद के विभिन्न सोपान
10.12 समाज में सूफी संतों की भूमिका
10.13 सूफीवाद तथा भक्ति आंदोलन
10.14 सूफी संतों की साहित्यिक देन

भारतीय मध्यकालीन इतिहास में भक्ति आंदोलन का अत्यधिक महत्त्व है। इसने न केवल तत्कालीन मानव के धार्मिक जीवन को परिवर्तित किया वरन् सामाजिक जीवन को भी प्रभावित किया। एक धार्मिक अवधारणा के रूप में भक्ति का अर्थ है मोक्ष प्राप्ति के लिये व्यक्तिगत तौर पर पूजे जाने वाले सर्वोच्च ईश्वर के समक्ष आत्मसमर्पण। इस सिद्धांत का उद्भव प्राचीन भारत के ब्राह्मणवादी एवं बौद्ध दोनों परंपराओं में ढूंढा जाता है। इसका मूल गीता जैसे ग्रंथों से जोड़कर देखा जाता है।

10.1 भक्ति आंदोलन का इतिहास लेखन तथा प्रवृत्तियाँ
(Historiography of Bhakti Movement and Trends)

- भक्ति आंदोलन अखिल भारतीय स्तर पर एक व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन था। यह आंदोलन एक लंबे समय (लगभग 7वीं शताब्दी से लेकर 17वीं शताब्दी) तक चला तथा इस दौरान एक ही साथ इसमें अनेक प्रवृत्तियाँ देखी गईं। स्वाभाविक रूप में विभिन्न विद्वानों ने इसके उद्भव एवं स्वरूप का विश्लेषण करते हुए अलग-अलग मत प्रस्तुत किये हैं।
- भक्ति आंदोलन के स्वरूप का अध्ययन करने व लिखने वाले आरंभिक विद्वान प्राच्यवादी व भारतविद (Indologist) थे। इन्होंने भक्ति आंदोलन को कृष्ण भक्ति/वैष्णववाद के रूप में चिह्नित किया तथा भक्ति आंदोलन पर ईसाई धर्म के प्रभाव की चर्चा की है। प्राच्यवादियों एवं भारतविदों के उत्तर में भारतीय विद्वानों ने भक्ति आंदोलन को देशी उत्पति बताने का प्रयास किया। इस संदर्भ में आर.जी. भंडारकर ने साहित्यिक एवं पुरालेखीय स्रोत के आधार पर कृष्ण भक्ति की प्राचीनता सिद्ध करते हुए भक्ति आंदोलन को देशी उत्पत्ति सिद्ध करने का प्रयास किया। एक अन्य विद्वान आर.सी.जेहनर (R.C.Zeehner) ने भक्ति आंदोलन की द्रविड़ उत्पत्ति (Dravidian Origion) पर चर्चा की है। वहीं डॉ.एस. राधाकृष्णन ने भक्ति के उद्भव को भगवद्गीता में खोजने का प्रयास किया है।

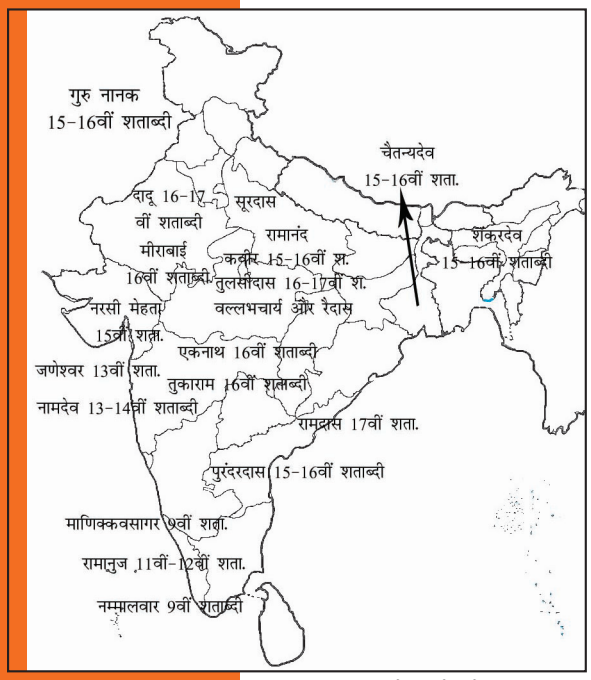

चित्र: मुख्य भक्ति संत तथा उनसे जुड़े क्षेत्र

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. "भक्ति और सूफी आंदोलनों ने एक ही सामाजिक प्रयोजन की पूर्ति की थी।" विवेचना कीजिये। **UPSC (Mains) 2017**
2. "शंकर के अद्वैत सिद्धांत ने भक्तिवाद की जड़ों को ही काट दिया।" क्या आप इससे सहमत हैं? **UPSC (Mains) 2016**
3. "सूफी एवं मध्यकालीन रहस्यवादी संत इस्लामिक हिन्दू समाजों के धार्मिक विचारों और आचार (प्रथाओं) को अथवा समाजों की बाह्य संरचना को किसी पर्याप्त मात्रा तक रूपांतरित करने में असफल रहे।" पक्ष/विपक्ष में तर्क दीजिये। **UPSC (Mains) 2015**
4. मध्यकालीन भक्ति साहित्य के विकास में वैष्णव संतों के योगदान का मूल्यांकन कीजिये। **UPSC (Mains) 2014**
5. लाल देद की भक्ति तथा रहस्यवाद कश्मीर में सामाजिक शक्ति के रूप में उभरी। टिप्पणी कीजिये। **UPSC (Mains) 2013**
6. भक्ति के इतिहास लेखन में विभिन्न प्रवृत्तियों की विवेचना तथा समीक्षा कीजिये। **UPSC (Mains) 2013**
7. भक्ति के वैचारिक आधार के विकास में आचार्यों के योगदान का मूल्यांकन कीजिये। **UPSC (Mains) 2012**
8. भक्ति आंदोलन के उद्भव पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
9. भक्ति आंदोलन की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये, बताइये कि उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के उदय के क्या कारण थे?
10. "कबीर की भक्ति परंपरा में सामाजिक-धार्मिक परिवर्तन का तीव्र स्वर सुनाई देता है।", इस कथन की समीक्षा कीजिये।
11. गुरु नानक के भक्ति दर्शन पर लेख लिखिये तथा एक प्रगतिवादी समाज सुधारक के रूप में गुरु नानक की भूमिका का मूल्यांकन कीजिये।
12. सल्तनत काल में सूफी मत के विकास पर एक संक्षिप्त लेख लिखिये।
13. भारत में सूफी आंदोलन के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिये तथा बताइये कि क्यों सूफी आंदोलन भारत में लोकप्रिय हुआ?
14. साहित्यिक क्षेत्र में सूफी संतों के योगदान पर टिप्पणी कीजिये।
15. सूफी तथा भक्ति आंदोलन के बीच समानता तथा असमानता के बिदुंओं को स्पष्ट कीजिये।
16. सूफीवाद के सिद्धांत के विभिन्न तत्वों को स्पष्ट कीजिये।
17. प्रमुख भारतीय सूफी सिलसिलों को रेखांकित करते हुए उनके बीच अंतर स्पष्ट कीजिये।

अध्याय
11

मुगल साम्राज्य एवं नीतियाँ
(Mughal Empire and Policies)

11.1 शेरशाह: प्रशासनिक व्यवस्था एवं भू-राजस्व सुधार
11.2 मुगल शासकों की धार्मिक नीति
11.3 मुगलों की राजपूत नीति
11.4 मुगलों की दक्कन नीति
11.5 मुगल शासकों की विदेश नीति
11.6 मुगल शासक एवं अहोम राज्य
11.7 मनसबदारी व्यवस्था
11.8 मुगल अर्थव्यवस्था
11.9 मुगल काल में शहरीकरण
11.10 मुगलों की भू-राजस्व व्यवस्था
11.11 मुगल साम्राज्य का पतन
11.12 मराठा साम्राज्य
11.13 शिवाजी की प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था
11.14 18वीं सदी में क्षेत्रीय राज्यों का उदय
11.15 सिक्ख समुदाय एवं खालसा पंथ का विकास

मुगल दो महान वंशों के वंशज थे। माता की ओर से वे मध्य एशिया के मंगोल शासक चंगेज खाँ के परिवार से संबंध रखते थे तथा पिता की ओर से वे तैमूर के वंशज थे। यद्यपि मुगल शासक अपने को चंगेज खाँ के वंशज होने की बजाय तैमूर के वंशज होने पर गर्व अनुभव करते थे क्योंकि उनके इस महान पूर्वज ने 1398 ई. में दिल्ली पर कब्ज़ा कर लिया था तथा बाबर की भी आरंभ से इच्छा हिंदुस्तान को जीतने की थी। बाबर ने भी अपने कृति 'तुजुक-ए-बाबरी' में लिखा है कि "उसने काबूल को जीतने (1504 ई.) के बाद भारत में सैन्य अभियान करने का निश्चय किया क्योंकि उसके वंशज (तैमूर) का कभी उन भारतीय प्रदेशों पर कब्ज़ा था।" दूसरे बाबर को मध्य एशिया में उज़बेकों का भी दवाब का सामना करना पड़ रहा था। इस कारण से भी बाबर भारत में नए अवसर तलाश रहा था। शीघ्र ही बाबर को यह अवसर तब मिला जब पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ ने इब्राहिम लोदी के विरुद्ध बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिये आमंत्रित किया। जैसा की ज्ञातव्य है कि बाबर एवं इब्राहिम लोदी के मध्य पानीपत का युद्ध निर्णायक रहा। इस युद्ध के परिणाम के साथ ही एक तरफ जहाँ लोदियों का सूर्य सदा के लिये अस्त हो गया वहीं भारत में मुगल वंश की नींव पड़ी।

फिर बाबर ने मेवाड़ के शासक राणा सांगा एवं पूर्व में अफगानों को पराजित कर अपनी स्थिति अधिक मज़बूत की। बाबर की भारत में इन विजयों के पश्चात् निम्नलिखित रूपों में राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए:

1. अपने पूर्ववर्तियों के विपरीत मुगलों ने एक बड़े साम्राज्य की स्थापना की। वस्तुत: सोलहवीं सदी के उत्तरार्द्ध से, इन्होंने दिल्ली व आगरा से अपने राज्य का विस्तार शुरू किया और सत्रहवीं शताब्दी में लगभग संपूर्ण महाद्वीप पर आधिपत्य स्थापित कर लिया।
2. मुगल साम्राज्य की स्थापना के पश्चात् मध्य एशिया की राजनीति में भारत का प्रभाव बढ़ा, क्योंकि बाबर की भारत विजय के पश्चात् काबुल, गजनी व कांधार का क्षेत्र भारत का हिस्सा बन गया। साथ ही काबुल और कांधार पर नियंत्रण रखना सामरिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण था क्योंकि भारत पर आक्रमण के विरुद्ध यह एक प्रकार से रक्षा पंक्ति जैसा काम करता था। आर्थिक दृष्टि से भी देखें तो काबूल और कांधार पर नियंत्रण होने से भारत एवं मध्य एशिया के व्यापार में काफी वृद्धि हुई।

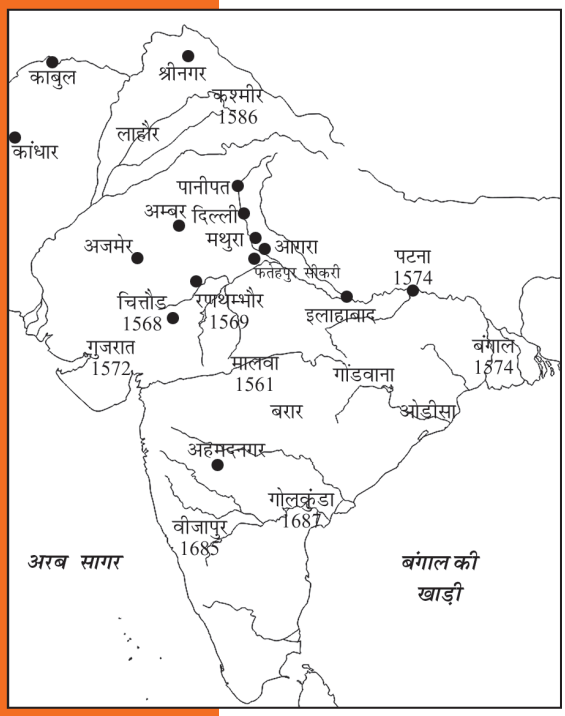

अध्याय
12

मुगलकालीन सभ्यता और संस्कृति
(Civilization and Culture of Mughal Period)

12.1 आर्थिक ढाँचा
12.2 सामाजिक अवस्था
12.3 शिक्षा का विकास
12.4 साहित्यिक उपलब्धियाँ
12.5 मुगलकाल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
12.6 मुगल कला
12.7 मुगल कारखाना

सोलहवीं शताब्दी के बाद भारी संख्या में मिले दस्तावेज़ों से इतिहासकारों को मुगलकालीन अर्थव्यवस्था को विस्तारपूर्वक समझने में सहायता मिली है। अबुल फजल द्वारा अत्यंत सावधानी से तैयार 'आईन-ए-अकबरी' विभिन्न विषयों पर सांख्यिकीय जानकारी प्रदान करता है। राजस्थान की जानकारी का एक अत्यंत बहुमूल्य स्रोत मुहणौत नैणसी का 'मारवाड़ रा परगना री विगत' है।

12.1 आर्थिक ढाँचा *(Economic Structure)*

मुगलकाल में भारतीय समाज आर्थिक दृष्टि से विभिन्न भागों में बँटा हुआ था। सबसे श्रेष्ठ स्थिति बादशाह, बड़े-बड़े मनसबदारों और राजपूत राजाओं की थी। बादशाह का दरबार एवं 'हरम' वैभव और विलासिता के केंद्र थे। इसी प्रकार की स्थिति राज्य के बड़े-बड़े मनसबदारों और राजपूत-राजाओं की थी। इनके अतिरिक्त राज्य के छोटे-बड़े कर्मचारियों की स्थिति भी संतोषजनक और लाभप्रद थी। व्यापारी और उद्योपति वर्ग में भी विभिन्न श्रेणियाँ थीं। सूरत के विरजी बोहरा को संसार का सबसे धनवान व्यक्ति माना जाता था और अकेले अब्दुल गफूर का व्यापार संपूर्ण ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापार के बराबर था। लघु व्यापारियों और उद्योगपतियों की स्थिति बहुत अच्छी न थी परंतु संतोषजनक मानी जा सकती है। उनके पश्चात् विभिन्न श्रेणी के विद्वान, कलाकार और कारीगर थे जिनको बादशाह, सरदारों तथा धनी व्यक्तियों से संरक्षण प्राप्त होता था उनकी स्थिति अच्छी थी किंतु उनमें से अधिकांश को साधारण जीवन व्यतीत करना पड़ता था। कृषि-मजदूर तथा अन्य मजदूरों की स्थिति ठीक न थी। बहुत साधारण वेतन के कारण उनका जीवन-स्तर गिरा हुआ था। समाज का निम्नतम् वर्ग किसानों का था जो सबसे अधिक थे और सबसे ज्यादा उत्पादन करते थे। परंतु उन पर कर-भार सबसे अधिक था और जिनका शोषण राज्य कर्मचारी सबसे अधिक करते थे। इस प्रकार मुगलकालीन आर्थिक ढाँचा सामंतवादी था जिसमें समाज उच्च और निम्न वर्गो में बँटा हुआ था।

1. कृषि

- मुगलकालीन आर्थिक व्यवस्था का मुख्य आधार कृषि था। किसान भूमि को लकड़ी के हलों से जोतते थे। हल में केवल एक लोहे का काँटा होता था और कभी-कभी तो वह भी नहीं, क्योंकि भारत की हल्की मिट्टी के लिये भारी हल की आवश्यकता नहीं थी। भारतीय किसान कपास जैसी कुछ फसल बोने में बीज-वापित्र का भी प्रयोग करते थे। वर्षा के पानी के अतिरिक्त किसान कृत्रिम सिंचाई का सहारा लेते थे विशेषकर कुओं और तालाबों का। मध्य भारत में दक्कन और दक्षिण में तालाब तथा हौज सिंचाई के प्रमुख स्रोत थे। उत्तर के मैदानों में नदियों से नहरें निकाली गईं।
- भारतीय किसान अनेक प्रकार की खाद्य और फसलें उगाते थे। विद्वानों के अनुसार आगरा प्रांत के राजस्व क्षेत्र में कम से कम इकतालीस प्रकार की फसलें उगाई जाती थीं। आईन-ए-अकबरी में दिल्ली सूबे में फसलें उगाई जाने वाली सत्रह रबी और छब्बीस खरीफ फसलों का उल्लेख है। प्रमुख उपज के रूप में गेहूँ, चावल, चना, जौ, दलहन, बाजरा, दालें उगाई जाती थीं। इनके अलावा ऐसी फसलें भी उगाई जाती थीं जिनका उपयोग वस्तु- निर्माण में किया जाता था। इन फसलों पर भू- राजस्व ऊँची दरों से लिया जाता था। इसलिये उन्हें अक्सर नकदी फसलें या श्रेष्ठतर फसलें कहा जाता था। सत्रहवीं सदी में दो नई फसलें उगाई जाने लगीं - तंबाकू और मक्का। इस काल में रेशम का उत्पादन बंगाल में इतनी मात्रा में होने लगा कि चीन से इसके आयात की जरूरत नहीं रही। बागवानी में भी अनेक महत्त्वपूर्ण विकास हुए

अध्याय
13

इतिहास लेखन की मध्यकालीन परंपरा
(Medieval Tradition of Historiography)

13.1 सल्तनतकालीन इतिहास लेखन
13.2 इंडो-पर्शियन इतिहास लेखन
13.3 मुगलकालीन इतिहास लेखन
13.4 कुछ अन्य इतिहासकार और उनकी कृतियाँ

13.1 सल्तनतकालीन इतिहास लेखन
(Historiography during the Sultanate Period)

भारतवर्ष में मुस्लिम शासन के आगमन के साथ इतिहास-लेखन में एक बड़ा परिवर्तन आया। इस्लाम के आगमन के बाद मुस्लिम घटनाओं के क्रमबद्ध लेखों ने, पूर्व में घटित घटनाओं की, जागरूक हित के साथ सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की व्यावहारिक शैली से परिचित कराया। यूरोप की तरह, सल्तनत काल में मुस्लिम लेखों को साधुओं द्वारा नहीं लिखा गया था लेकिन इस दौरान विद्वानों तथा प्रशासकों, जो कि घटनाओं के चश्मदीद गवाह थे, ने दस्तावेज़ों को सृजित किया। वस्तुत: मुस्लिम इतिहासकारों ने अरबी तथा फारसी इतिहासकारों की लिखने की शैली का अनुकरण किया। उन्होंने अपने बादशाहों, जिन्होंने उन्हें संरक्षण दे रखा था, के अभियानों और विजयों को वर्णित किया ताकि वे अपने सरंक्षक को खुश रख सकें। अत: उनके उत्तम तथा गंभीर प्रयासों के बावजूद, उनके ग्रंथों में कुछ कमियाँ रह गईं। एक प्रसिद्ध विद्वान **महीबुल हसन** उचित इंगित करते हैं, "मध्ययुगीन इतिहासकारों ने अपने उद्यम को गंभीरता से लिया और इतिहास के उच्च विचार को बनाए रखा। उदाहरण के तौर पर, बरनी 'इतिहास' और 'इल्म-उल हदीस' को समतुल्य मानता था और विश्वास करता था कि इतिहासकार को सत्य के प्रति निष्ठावान होना चाहिये और अतिशयोक्ति तथा शब्दों की वृथा भाषा से परहेज़ रखना चाहिये। लेकिन दुर्भाग्यवश, अधिकांश मध्यकालीन इतिहासकार दरबार से संबंध रखते थे, उन्होंने केवल वही नहीं लिखा जो उन्हें उपयुक्त अनुभव हुआ वरन् अपने संरक्षकों को उनकी प्रशंसा के लेखों तथा काव्यों से तुष्ट भी किया।"

नि:संदेह कुछ इतिहासकारों ने सल्तनत काल में आँखों देखा वर्णन प्रस्तुत किया है किंतु निम्नलिखित कारणों से उनके वर्णन उच्चकोटि के नहीं कहे जाते हैं-

1. अधिकांश इतिहासकार किसी-न-किसी सुल्तान के संरक्षण में थे, अत: उन्होंने केवल अपने स्वामियों की उपलब्धियों का ही गुणगान किया है और उनकी दुर्बलताओं के संबंध में कोई वर्णन नहीं किया है।
2. सल्तनतकालीन इतिहासकारों ने केवल घटनाओं का उल्लेख किया और कालक्रम की उपेक्षा की।
3. चूँकि इस समय के इतिहासकार केवल शासक के सेवक मात्र थे, अत: अपने स्वामी की नाराज़गी के भय के कारण उन्होंने पक्षपात रहित वर्णन नहीं किये हैं।
4. इस समय का इतिहास लेखन धर्म से अनुप्राणित था और विद्वान इतिहास को दैविक इच्छा स्वीकार करते थे और इतिहास को धर्म के अधीनस्थ मानते थे।
5. सल्तनतकालीन इतिहासकारों ने केवल युद्धों और सुल्तानों की जीवन शैली का उल्लेख किया है और जनसाधारण व समाज का चित्रण नहीं किया, जिससे इतिहास का स्वरूप दुर्बल हो गया।
6. इतिहासकारों ने कारण और परिणाम के सिद्धांत की ओर ध्यान नहीं दिया और केवल दस्तावेज़ों में वर्णित घटनाओं का ही उल्लेख किया है।
7. इस समय के इतिहासकारों का एकमात्र उद्देश्य इस्लाम की शान को बढ़ाना व मुस्लिम संस्कृति का विस्तार करना था।
8. इतिहासकारों ने साक्ष्यों की प्रामाणिकता की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया अपितु, लोकगीतों, परंपराओं और काल्पनिक घटनाओं को अपने लेखन का आधार बनाया।

शुरू में मुस्लिम लेखन की भाषा अरबी थी, किंतु जल्द ही यह एक वैकल्पिक भाषा पर्शियन फारसी में परिवर्तित हो गई। सल्तनतकालीन ग्रंथ जो सन् 1200 से 1440 ई. तक लिखे गए थे, निम्नलिखित चार भागों में बाँटे जा सकते हैं-

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456